केसरीसिंहपुर – अतीत का आत्मकथ्य

एक तालाब से शुरू हुआ था मेरे अस्तित्व का निर्माण

अपने अतीत की बात करना, हर एक के लिए एक आकर्षक पहलू होता हैं – यह वर्तमान की नींव की हो तो बात होती है। मुझसे भी जब कोई अपने अतीत की बात करता है तो मैं भावुक होकर अपनी यादों के सुमन्दर में बहुत दूर तक चला जाता हूॅ – अपनी विचार श्रृखंला के सहारे अब जब मैं अपने अतीत के बारे में बात करता हूॅ, मुझे लगता है बहुत कम लोगों ने मेरे अतीत में जाने की कोशिश की। ऐसी कोशिश जो मुझे अपने आप से उतर पर पीछे झांकने की ओर प्रेरित करती। अतीत किसी के व्यक्तित्व के जन्म के साथ ही शुरू हो जाता है क्योंकि हर पल जो बीत जाता है अतीत बन जाता है। मरे बचपन की, मेरे जन्म की बात उनकी यादें अब धूल की परत के तले पड़ी है, पर जब मैं इन्हें हटा रहा हूॅ, मुझे अतीत के आनन्द कर अनुभूति भी हो रही है। जहां तक मुझे मेरे ऐतहासिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक साक्ष्यो के आधार पर ज्ञात हुआ है, कि मेरा जन्म 1889 में हुआ। गर्मियों के दिनों की बात है, कोई फकीर आया और उसने मेरे बसाव को जन्म दे दिया। एक छोटा सा तालाब था जिसने मुझे यहां आने के लिए आंमत्रित किया होगा। यह मेरे शुष्क सीने का इक नखलिस्तान ही था। उस समय का भौगोलिक भूदृश्य दूर–दूर तक रेत जो गर्मियों में आंधिया के साथ मेरे सीने पर से सरसराती हुई गुजरती थी और टीले बनते–मिटते स्थानांतरित होते रहते थे। कारवां भी गुजरते थे, पर उनके मार्गो पर बात करने के लिए मुझे अपने आपको बहुत खोजना पड़ेगा जो अभी बाकी पड़ा काम है।

आज मैं अपने आप को राजस्थानी मरूभूमि के उत्तरी किनारे पर पाता हूं परन्तु जब भूगर्भिक कालक्रम के सन्दर्भ में अपने आपको देखता हूं तो राजस्थानी मरूभूमि के जन्म के पहले के काल में पहुंच जाता हूं। यह वह समय है, जबकि अरब सागर मेरे से कुछ ही दूरी पर दक्षिणी की ओर हुआ करता था– और यह करोड़ो वर्ष पूर्व– भूगर्भिक काल के पैमाने पर देखू तो जूरैमिक से किटेशियस ओर इयासिन युग में जबकि हिमालय श्रृखंला दक्षिणी श्रेणियां अभी टेथिस सागर के गर्भ में थी, एक विशाल नदी– जिसे "पेस्को" ने "इन्डोब्रह्मा" तथा पिलग्रम ने "शिवालिक" नदी का नाम दिया है और "दृषद्वती" नामों से जाना जाता है– ने ही दूर–दूर से मिट्टी लाकर मेरे गर्भ, जो कि उस समय एक गर्त्त के रूप में रहा होगा भरा होगा। इसके बाद मेरे आस–पास के क्षेत्र में घने जंगल भी रहे, परन्तु कालान्तर में जलवायु परिवर्तन से मेरे सीने पर रेत के अम्बार लगते गए। मैं बरखान टीलों से युक्त मरूभूमि का उदाहरण बन गया। इस जलवायु परिवर्तन में दक्षिण–पश्चिम से शुष्क हवाएं चलनी शुरू हुई जो अपने साथ रेत भरी आंधियां भी लाती है। धीरे–धीरे मेरे पश्चिम की ओर निम्न दाब केन्द्र विकसित होता चला गया और आंधियों के दिनों की संख्या बढती गयी और धरातल शुष्क होता गया और मेरा प्राचीन उपजा ऊपन रेतीले टीलो और शुष्क जलवायु में लुप्त हो गया। शुष्कता के साम्राज्य का फैलाव 5000–6000 वर्ष पूर्व ही शुरू हुआ। 3000–5000 ई.पू. तक तो मेरे आसपास के क्षेत्र में समृद्ध नगर विकसित रहे जैस घग्घर की प्राचीन धारा के किनारे स्थित नगर।

1889 से 1899 की अवधि में मेरे यहां फरीद नामक व्यक्ति के बसने से मेरी बस्ती के लोगों की संख्या बढने लगी। छपत्रा काल (1899 का काल) के समय फरीद के पशुधन का अधिकांश भाग अकालग्रस्त हो गया।इसी कारण वह मुझे बेसहारा छोडकर कहीं अन्यंत्र चला गया। मुझे अकेला व बेसहारा देख मुझ पर तरस खाकर गुलाम माडल नाम का प्रमुख व्यक्ति मेरे पास आया और उसके साथ साथ मेरे यहां मांन्डल जाति के मुसलमानों के अन्य घर भी आए। उसी बाबा फरीद के नाम पर मेरा नाम फरीदसर पडा जो कि आज भी बरकरार है। लोग आते रहे और मेरे यहां बस्ती बनती रही। उस समय तक मेरी बस्ती के अधिकांश लोग उसी पुराने तालाब के आसपास रहा करते थे। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मेरे लोगों का मुख्य धंधा पशुपालन था। तब मेरे यहां से लोग मीलों दूर तक लोग पशु चराने जाते थे। 20वीं शताब्दी के शुरू से ही मेरे आस पास फैली मरूभूमि के दिन पलटने के आसार बनने लगे। जबकि बीकानेर दरबार में मेरे आस पास के क्षेत्र को पानी लाकर देने की योजनाओं को सुगबुगाहट प्रारम्भ हो गई। 1912 में सिद्धांततः यह स्वीकार कर लिया गया था कि मेरी रियासत बीकानेर मरूस्थली को गंगनहर के जल के माध्यम से सींचकर कुछ अजूबा किया जाये। परन्तु यह कोई आसान काम न था, तय यह निरी पूरी कल्पना की उडान सी लगती थी। मुझे भी तब इस पर ज्यादा विश्वास न हो पाया था। गंगनहर के लिए एक के बाद एक योजनाएं बनी परन्तु वह कहीं न कहीं अटक सी जाती, पर 20वीं योजना को वास्तविक रूप में स्वीकृति मिल गई। इसके लिए 4 सित. 1920 को पंजाब, बहावलपुर और मेरी सियासत बीकानेर के बीच समझोता हुआ । अन्ततः 26 अक्टुबर को मेरी सूनी कोख को हरी करने की योजना तैयार हो गया। गंगनहर कर दिया गया। मेरे व मेरे आसपास के क्षेत्र की काया पलट होना शुरू हो गई। रेतीले टीलों पर मानवीय प्रवासों ने एक नवीन किस्म की कृषि संस्कृति को जन्म दे दिया। गंगनहर के मेरे यहां आते ही रियासत के महाराजा गंगासिंह ने प्रोत्साहन दिया और पंजाब से लोग मेरे आस पास बसने शुरू हो गये। मेरे यहां जैनों का परिवार उसी समय आकर रहने लगा जिन्होंने मेरे यहां रहने वाले लोगों के परचून की दुकान खोली थी।

संस्कृति के साथ साथ यह एक ग्रामीण कृषि उपज बिक्री केन्द्र के रूप में होने लगा। मेरे आस पास के क्षेत्र की कृषि उपज मेरे लोगों द्वारा होने वाले व्यापार का आधार बन गई। मैने देखा कि किस प्रकार बरखान टीलों के खिसकते धरातल पर गंगनहर का प्रभाव, मेरे भूदृश्य को नवीन चेतना प्रदान कर गया। इस नवीन चेतना को रवानी प्रदान करने के लिए गंगनहर के साथ एक रेल लाईन बिछाई गई। यह मेरे आवागमन का मुझ तक पहुंचने का अच्छा साधन बन गया। 1 मई 1926 को मेरे यहां पहला रेल लाईन गंगानगर से यही रेल लाईन मुझे विस्तृत व्यापारिक गतिविधियों का आधार हो गया। 1930 के दशक की कुछ बातें मुझे याद आ रही हैं।तब मेरे यहां 133 घर आबाद हो चुके थे जिनमे कुल 704 लोग निवास करते थे जिनमें 391 पुरूष और 303 स्त्रीयां थी। तब मेरे यहां ओसतन वर्षा हुआ करती थी और मेरे यहां तापमान आज की ही तरह 45 डिग्री से 49 डिग्री तक रहता था।

रेल लाईन जब मेरे सीने से होकर गुजरी तो मुझे फरीदसर से केसरीसिंहपुर बना गई।यह नाम मुझे बीकानेर राजधानी के महाराजा कर्णसिंह के शूरवीर पुत्र केसरीसिंह के नाम से प्राप्त हुआ। मेरे आस पास के गावों के नाम नहर के मोघों के आधार पर रखे जाने लगे। इसी से मेरा पडोसी गांव दलपत सिंहपुर 25 एच हो गया, धनूर 6 वी मोहलां 12 एच गुलाबेवाला 25 एफ हो गये। नहर आने से पहले मेरे आस पास अनेक अन्य गावों की स्थापना होती चली गईं। 1930–32 तक तो मेरे यहां के व्यापारियों ने एक कच्ची मण्डी बना ली थी जहां से कृषि उपजों का व्यापार बहावलपुर और अन्य राजपुताना स्टेट के साथ करते थे। उस समय मेरे यहां के लोगों पर मरूस्थल के खुलेपन का अहसास इतना हावी हो चुका था कि वे अपनी दुकानों में किवाड लगाने की जरूरत नहीं समझते थे। 1930 से 1933 के बीच मेरे यहां पुलिस थाना बन गया जो कि इससे पहले धनूर में था। नहर आने के कुछ समय पश्चात् ही मेरे यहां नायब तहसीलदार भी बैठने लग गया जो कि सादांवालीकाट में बैठता था।

उस समय बीकानेर रियासत के महाराजा गंगासिंह भी मेरे यहां के लोगों की फरियादें सुनने आते थे। वे केवल मेरे रेल्वे स्टेशन की गाडी के अन्दर लोगों की फरियादें सुनते थे। जहां तक मुझे याद है मेरी रियासत के महाराजा गंगा सिंह कभी भी रेलगाडी से उतरकर मुझे झांकने तक भी नहीं आयें।

रेत के टीले किस प्रकार जमीन में बदले इसको देखना मेरे जीवन का एक अद्भुत अनुभव रहा। पंजाब के मेहनती किसानों की इच्छा शक्ति ओर गंगनहर का जल मिलकर मेरे यहां सोना उपजने लगी।

पहले पहले टीलों के बीच की साफ जगह पर पानी लगाया जाता और वहीं पर कुछ फसलें बोई जाती और आने वाले वर्षों में मेरे यहां टीलों के थोडे थोडे हिस्से भी खाली जगह पर बिछते गये और धीरे धीरे बीच की कृषि योग्य भूमि बढते बढते समतल बन गई ओर मेरे यहां का भूदृश्य जो कि कभी मेरी आखों में आंसु ला देता था धीरे धीरे टीलों से कृषि परिदृश्य में बदलने लगा जिसे देखकर मैं खुशी से फूला नहीं समाता। मेरे आस पास की जमीन अधिक उपजाउ होने के कारण मेरे यहां फसले बहुत अच्छी होने लगी। इसी कारण मै आस पास के दूर दराज क्षेत्रों की मुख्य व्यपारिक मण्डी भी बन गया। पहले मेरे यहां वर्तमान पशु चिक्तिसाल्य की जगह के आस पास कच्ची मण्डी थी जिसे 1943 में वर्तमान पक्की मण्डी वाली जगह में पककी मण्डी के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। आप ये मत समझ लेना में आज ही मुख्य व्यापारिक मण्डी हूं। मै आजादी से पहले भी मुख्य व्यापारिक मण्डी था। उस समय मेरे यहां बहावलपुर के मंगलोटगंज , घमण्डपुर व मेरे आस पास के क्षेत्रों से लाखों किवंटल गेहुं आया। मुझे याद है कि उस समय मेरे यहां से मनों के मन देसी घी बीकानेर रियासत में बिकने के लिए आता था। मैं व्यापारिक मण्डी था इसी कारण बीकानेर राजघराने की दृष्टि भी मेरे पर अच्छी थी।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व तक मेरे यहां के जांबाजो के शक्ति एवं कौशल प्रदर्शन के लिए विभन्न प्रकार के खेल मेले गुलाम मान्डल द्वारा आयोजित करवाये जाते थे। ईद पर मेरे यहां बहुत बड़ा मेला लगता था जो कि आसपास के क्षैत्रों में उस समय काफी विख्यात था। इस मेले के अवसर पर मेरे यहां कुश्तियां होती, भारतोलन मुकाबले होते, समची के लिए तो सब दिवाने थे। इन प्रतिस्पर्द्धाओं में भाग लेने के लिए आसपास की रियासतों से मेरे यहां काफी जांबाज आते भी अपने कौशल से लोगो का दिल जीतने का प्रयास करते। इन खेलो को देखने के लिए मेरे यहां दूर–दराज के इलाको से भारी भीड़ आती थी। समची खेल जो कि उस समय काफी लोकप्रिय था वर्तमान सर्किल कबड्डी से कुछ–कुछ मिलता–झूलता खेल था। इस खेल में खिलाड़ी शरीर पर तेल की मालिश करते और मैदान में उतर आते। ढोल भी बजते। गुलाम मान्डल का लड़का लेखू समची का काफी अच्छा खिलाड़ी था परन्तु मेरे पड़ौसी गांव मलकाना खुर्द का साधुसिंह ही एक ऐसा खिलाड़ी था जो हमेशा ही लेखू को टक्कर देता था और उसे लगभग हरा ही देता था। समची के चैम्पियन को 10 मन घी ईनाम मे दिया जाता था। ये खेल मेरे यहां लगने वाले ईद के मेले का मजा दोबाला कर देते थे। अगर आज की अवस्थिति के अनुसार देखें तो ये खेल मेरे यहां वर्तमान गौशाला एवं महावीर कॉटन फैक्ट्री वाली जगह पर होते थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति पूरे देश के लिए राजनैतिक, आर्थिक एवं सास्कृतिक हलचल का कारण बन गयी। फिर मेरी स्थिति तो उस समय बिल्कुल सीमा पर ही थी। फिर मैं इस हलचल से अछूता कैस रह सकता था। पहले मैं बीकानेर और बहावलपुर रियासतो की सीमा पर था और फिर भारत–पाक सीमा पर मेरा मुकद्दर ही हो गयी। पहले सीमा पर स्थित होने का मेरे पर धनात्मक प्रभाव था परन्तु आजादी के पश्चात् मुझे ऋणात्मक प्रभाव अपने आगोश में

लेना चाहता था। पहले सीमा पर मेरी स्थिति मेरे लोगो के व्यापार की उत्तम संभावनायें प्रदान करती थी, अब इस स्थिति के कारण मेरे यहां व्यापार वांछित होने की नौबत आ पड़ी। पहले मेरे यहां के व्यापारियो का व्यापारिक सम्बन्ध सीधा कराची से था परन्तु कराची के पाकिस्तान में चले जाने के कारण मेरे व्यापारियों ने अपना सम्बन्ध बम्बई से जोड़ लिया।

सांस्कृतिक उथल–पुथल भी मेरे लिए काफी कष्टदायक ही थी– बरसों से मेरी कोख में पल रहे लोग अपना सब कुछ छोड़कर जातिवाद की जंजीरों में जकड़े होने के कारण उस पार जाने लगे मैं बेसहारा होकर उनके जाने का मन्जर देख रहा था और मैं भी उन्हें रोक पाने में असमर्थ साबित हो रहा था। मैं कर भी क्या सकता था मुझे इस बात का दुःख हुआ जिन लोगों को पालकर मैने बड़ा किया आज उन्हें परिस्थितियों के कारण अपना सब कुछ मेरे यहां छोड़कर मजबूरन जाना पड़ा। परन्तु इस उथल–पूथल में मैं एक बात पर गर्व कर सकता हूं कि जाने वालों को यहां रहने वालों ने किसी भी प्रकार के शारीरिक या आर्थिक नुकसान पहुचाने की चेष्टा नहीं की। मुस्लिम लोग आस पास के गावों से आज भी जैनों वाली गली में ईकठा होते और अपने साथ चार पांच हथियार बन्द लोगों को लेकर काफिले बनाकर रवाना हो जाते। वे जाते जाते अपना सोना चांदी जैसा बहुमुल्य सामान यहां के अपने मित्रों को दे गये। इस सबसे मेरा नैतिक बल बहुत उंचा हो गया और मेरे निवासियों ने आज तक मेरे इस गर्व को कायम रखा है और ऐसी प्रत्येक मुश्किल घडी में हिम्मत के साथ सामना किया है। जाने वालों के स्थान पर मेरे यहां पाकिस्तान से विस्थापित होकर अनेक लोग आये। ये लोग बहावलनगर, मिन्टनुसरी, सक्खर, खेरपुर, शिवपुरा, बदरू, रहीम्यार, सरमोधा आदि जिलों से आये।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से अब तक की अवधि में मेरे यहां जीवन उतरोतर आधुनिक्ता की और बढता चला गया। इसके विकास से यहां सुदृड अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। यही विकास शिक्षा चिकित्सा, संचार और परिवहन सेवाओं में भी झलकता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही मेरे यहां से बस व्यवस्था हिन्दुमलकोट और गंगानगर के लिए शुरू हुई। मेरे यहां से हिन्दुमलकोट और गंगानगर जाने के लिए पहले रेल्वे लाईन के साथ साथ कच्चा रास्ता था। बस शुरू होने से मेरे यहां से लोग अन्य जगहों पर रेलगाडी के अतिरिक्त घोडों पर, पैदल, उंटों पर, बैलगाडियों आदि साधनों से आते जाते थे। मुझे धुंधला धुंधला याद है कि 1961 के लगभग मुझे गंगानगर से पक्की सडक द्वारा वाया कमीनपुरा जोडा गया। मुझे याद है कि सडक निर्माण समय केसरीसिंहपुर से कमीनपुरा सडक का नाम गुरूगोविन्द सिंह मार्ग रखा गया था परन्तु वक्त ने मेरे यहां के लोगो ने इस सडक का नाम ही भुला दिया है जिसका मुझे बेहद अफसोस है।

1954 मुझे पंचायत का दर्जा हासिल करने का भी गौरव प्राप्त हुआ। उस समय मेरे पंचायत में फरीदसर, बीस एफ, ज्वालेवाला, 3 टी, लाटरी, घणजातियां, 19 एच, 2 वी, और खुद मैं था। 1954 से 1973 तक लगातार महांदेव प्रसाद गुप्ता मेरी पंचायत के सरपंच बने। 1960 में मेरे ही पेट को काटकर मुझे दो हिस्सों में बांट दिया गया। अब मुझे केसरीसिंहपुर और फरीदसर दो अलग अलग पंचायतों में बांट दिया।मेरे ही शरीर के हिस्से फरीदसर के प्रथम सरपंच धर्मवीर व द्वितीय सरंपच किशन लाल बने। मुझे 1973 में उस समय बेहद खुशी हुई जिस समय मेरे शरीर के दोनों टुकडों केसरीसिंहपुर और फरीदसर को मिलाकर नगरपालिका बना दिया। नगरपालिका बनाने के बाद मेरे विकास में काफी वृद्धि हुई। मुझे और कुछ भी याद आ रहा है कि आधुनिकता की दौड में मैं भी शामिल हो गया और उस समय मेरे क्षेत्र के चीफ इंजीनियर पृथ्वी सिंह घन्टेल के अथक प्रयासों से मेरे यहां अक्टूबर 1960 में बिजली आई। इससे मुझे काफी खुशी हुई। अंधेरे में रहने वाले लोग अब रोशनी में रहने लगे।मेरे यहां लगे कारखाने जो कि पहले भाफ के इंजनों से चलते थे अब बिजली से चलने लगे थे जिससे मेरे क्षेत्र में उत्पादन बढने लगा।

मेरी जन्संख्या में भी निरन्र वृद्धि होती चली गई। 1965–66 में मेरी जनसंख्या 2927, 1971 में 4834, 1986 में 9738, 1991 में 11751 और अब लगभग 13200 के करीब मेरी जनसंख्या है। मेरे यहां वर्तमान में लगभग 750 दुकाने और 1750 के लगभग मकान हैं। मुझे इस बात का काफी अफसोस है कि मेरे वहां शिक्षा के काफी प्रसार के बावजूद मेरी जनसंख्या का लगभग 50 प्रतिशत भाग अभी भी निरक्षर है। निरक्षरता को समाप्त करने के लिए हालांकि मेरे यहां चेतना साहित्य परिषद ने पिछले वर्ष काफी प्रयास किया परन्तु मुझे लगता है कि वह भी किसी विशेष प्रोत्साहन के न मिलने से शान्त होकर बैठ गई। फिर भी इस संस्था का मै उम्र भर ऋणी रहूंगा। मेरे यहां शिक्षा के क्षेत्र में शिव नारायण कुक्कड़, संत प्रताप सिंह और श्री सूर्य प्रकाश कुक्कड़ जो कि अब परलोक सिधार चुके हैं का भी आभारी रहूंगा जिन्होने मेरे यहां शिक्षा के प्रचार प्रसार में काफी योगदान दिया। मेरे यहा 1945 में पहला प्राथमिक स्कूल खुला जो कि वर्तमान में सीनियर हायर सैकण्डरी स्कूल बन चुका है। बालिकाओं की शिक्षा के सम्बन्ध में मेरे यहां स्व. श्री संतप्रताप सिंह के प्रयास भी सराहनीय रहे। जिनकी बदोलत मेरे यहां पहला बालिकाओं का प्राथमिक स्कूल खुला। वर्तमान में मेरे यहां लगभग 16–17 सरकारी स्कूल और गैर सरकारी शिक्षण सन्स्थाएं है जो मेरी नजर में जनसंख्या के लिहज से काफी है।

एक बात जो मैं आपको पहले बताना भूल गया वो यह है कि जब मेरे यहां पक्की मण्डी बनी उस समय व्यापारी दो गुटों में बंट गये थे। कुछ लोग पक्की मण्डी बनाना चाहते थे और कुछ नहीं। मैं शुक्रगुजार हूं

सादावालीकाट के साद हंस दास का जिनकी सीधी गंगासिंह तक पहुच थी ने पक्की मण्डी बनाने में बहुत सहयोग दिया। एक बात और मुझे याद आ रही है कि मुझे पीने के पानी के लिए रेल्वे स्टेशन व पंचायती मंदिर के आस पास पानी की कच्ची डिग्गियां थी जहां से पशु और मनुष्य पानी पीते थे। 1946–47 के लगभग मेरे यहां के लोगों ने पीने के पानी के लिए कुएं का निर्माण किया था जो कि आज भी वार्ड नः 6 में जोहड के पास मौजूद है।

अब मेरे यहां एक कृषि उपज बिक्री केन्द्र की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए सभी प्रकार की आवश्यक सुविधाएं प्राप्य हैं परन्तु मंडी यार्ड की कम होती जगह कृषकों के लिए बहुत बडी समस्या है। मुझे और अधिक सफल बनाने के लिए प्रबुद्धजनों के प्रयास मण्डी यार्ड के लिए अति आवश्यक है। शिक्षा के लिए मेरे यहां तीन हायर सैकेण्डरी स्कूल हैं जो मेरी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आवश्यक हैं। फिर भी इसमे कुछ और जुडना भी आवश्यक है। मेरी नजर में महांविद्यालय भी मेरे लिए अब एक जरूरी बात हो गया है। जिससे उच्च शिक्षा से वचिंत विद्यार्थी भी उच्च शिक्षा पा सकें। चिकित्सा व संचार सुविधाएं मेरी नजर में मेरे लिए पर्याप्त हैं परन्तु मेरे यहां परिवहन सेवाएं पर्याप्त नहीं की जा सकती। मेरे यहां से गुजरने वाला रेलमार्ग जो कभी बीकानेर रियासत का मुख्य रेलमार्ग था उसे हाशिये पर लाकर छोड दिया गया। मेरे यहां के रेल्वे स्टेशन पर माल ढुलाई के अव्यवहारिक निर्णयों के कारण रूक गया है। जिससे व्यापारी वर्ग को मेरे यहां परेशानी हो रही है। इसको ठीक ठाक करने के लिए इसको बडी लाईन में करना आवश्यक है जिससे मेरे यहां रेल अपनी पुरानी गरिमा प्राप्त कर सके और मेरा सम्बन्ध देश के विभिन्न विभागों से जुड सके। परिवहन सेवाओं के मामले में एक जख्म अभी तक भी मेरे सीने पर लगा हुआ है जो अभी तक मेरे सीने में नासूर बन चुका है। वह है बस अडडे का अभाव। परन्तु पता नहीं क्यों, सभी सम्भावनाओं के होते हुए भी इसका निर्माण नहीं हो पा रहा है।

इस प्रकार मैने अतीत के कुछ पन्ने आपके सामने रखे हैं। लेकिन अभी बहुत कुछ ऐसा है जो समय के गर्भ तले दब कर रह गया है और उसकी समृति धुंधली धुंधली है। उन सबको कभी भी भविष्य में मैं आपको याद करके बताउंगा, पर फिलहाल इजाजत चाहूंगा।

आपका अपना केसरीसिंहपुर